बी० ए० पार्ट -I, पेपर -I

दिनांक
02/05/2020

डॉ० चन्दा कुमारी
गेस्ट टीचर, हिन्दी विभाग,
रोहतास महिला महाविद्यालय,
सासाराम, रोहतास

Scanned with CamScanner

हिन्दी साहित्य के काल-विभाजन अथवा नामकरण का संक्षिप्त परिचय

हिंदी साहित्य का इतिहास भारतीय जनता के एक सहस्र अथवा सहस्राधिक वर्षों की चिंतनधारा का इतिहास है। जीवनधारा को मोड़नेवाली सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव साहित्य पर निश्चित रूप से पड़ता है। इसी दृष्टि-संकेत के आधार पर आचार्य शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास को चार काल-खण्डों में विभाजित किया है:-

(क) वीरगाथा काल —— 1050 से 1375 ई०
(ख) पूर्वमध्यकाल / भक्तिकाल —— 1375 से 1700 ई०
(ग) उत्तर मध्यकाल / रीतिकाल —— 1700 से 1900 ई०
(घ) आधुनिक काल / गद्यकाल —— 1900 से अबतक

चूँकि काल-विभाजन साहित्य-लेखकों के समक्ष एक समस्या बनी थी जिसको देखते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने पहले-पहल वैज्ञानिक विभाजन प्रस्तुत किया। इनके पूर्व के इतिहास-लेखकों की मान्यताओं पर जब हम विचार करते हैं तो सर्वप्रथम फ्रांसीसी लेखक गार्सा-द-तासी का नाम उल्लेखनीय होता है जिसने भारतीय आधुनिक आर्य भाषाओं का एक 'इस्त्वार द ला लितरात्यूर हिन्दुई हिन्दुस्तानी' नामक इतिहास लिखा जिसमें कुछ कवियों एवं उनकी रचनाओं का विवरण है। इसके पश्चात् हिंदी का प्रथम इतिहास ग्रंथ शिवसिंह सेंगर ने सन् 1883 ई० में लिखा जिसमें कवियों की जीवनी एवं घटनाओं का उल्लेख है। सन् 1889 ई० में शिवसिंह सेंगर के इतिहास को आधार बनाकर जार्ज ग्रियर्सन ने 'माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नार्दर्न हिन्दुस्तान' लिखा जिसमें उन्होंने हिंदी साहित्य के काल-विभाजन और प्रवृत्तियों के निर्देश की चेष्टा की। इसके पश्चात्

Scanned with CamScanner

मिश्रबंधुओं ने 'मिश्रबंधु विनोद' में करीब पाँच सौ कवियों पर प्रकाश डाला। इन्होंने भी काल-विभाजन की किसी वैज्ञानिक पद्धति को नहीं अपनाया। इन्होंने प्रवृत्तियों की अपेक्षा कालावधि पर विशेष ध्यान रखा। इसके बाद आचार्य शुक्ल ने सर्वप्रथम हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक काल-विभाजन एवं नामकरण प्रस्तुत किया है, जिसे किंचित संशोधन के साथ इस युग के वरिष्ठ समालोचक भी स्वीकार करते हैं।

आचार्य शुक्ल के मत को थोड़ा संशोधन के साथ उपस्थित किया है – डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने। इन्होंने भी हिंदी साहित्य के इतिहास को चार भागों में विभाजित किया, परंतु इनका दृष्टिकोण शुक्लजी से थोड़ा भिन्न है। इन्होंने जो उदाहरण पेश किए उसमें काल-विशेष की अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियों को भी ध्यान में रखा और इसीलिए इन्होंने निम्न प्रकार से काल-विभाजन कर नामकरण किया –

(क) आदिकाल —— 10वीं से 14वीं शताब्दी तक,
(ख) भक्तिकाल —— 14वीं से 16वीं शताब्दी तक,
(ग) रीतिकाल —— 16वीं से 19वीं शताब्दी तक,
(घ) आधुनिककाल — 19वीं शताब्दी के मध्य काल से अब तक,

आचार्य द्विवेदी के बाद डॉ० श्यामसुंदर दास का काल-विभाजन संबंधी मत आता है, जिसमें उन्होंने आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मत को स्वीकारा है। अंतर केवल इतना है कि शुक्लजी ने जहाँ वीरगाथाकाल को सं० 1050 से 1375 ई० तक माना है वहीं डॉ० दास ने इस काल की परिधि विस्तार सं० 1050 से 1400 ई० तक कर दिया है। वैसे मूल मान्यता में कोई खास अंतर नहीं है।

Scanned with CamScanner